Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)
E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

मोटे अनाज आधारित कौशल विकास कार्यक्रमों का बस्तर के जनजातीय युवाओं के रोजगार एवं आय वृद्धि पर प्रभाव : एक अध्ययन

श्री प्रेमजीत[1], डॉ. देवाशीष हालदार[2]

[1]शोधार्थी, [2]सहायक प्राध्यापक
[1,2]अर्थशास्त्र विभाग, शासकीय गुण्डाधूर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोण्डागांव (छ.ग.)

शोध सारांश :-
प्रस्तुत शोध का उद्देश्य बस्तर जिला के जनजातीय युवाओं के संदर्भ में मोटे अनाज आधारित कौशल विकास कार्यक्रमों की स्थिति का विश्लेषण करना तथा उनके रोजगार अवसरों एवं आयामों में होने वाली वृद्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन करना है। बस्तर क्षेत्र पारंपरिक रूप से मक्का, कोदो, कुटकी एवं रागी जैसे मोटे अनाजों की खेती के लिए जाना जाता है, जो स्थानीय आजीविका एवं पोषण सुरक्षा का महत्वपूर्ण आधार हैं। अध्ययन के लिए 102 उत्तरदाताओं से प्राप्त प्राथमिक आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है जिससे प्राप्त परिणामों से ज्ञात होता है की बस्तर क्षेत्र कि लगभग 65.70% उत्तरदाता कृषि कार्य और उससे जुड़े हुए अन्य कार्यों से जुड़े हैं तथा 58.80% उत्तरदाता मोटे अनाज की खेती करते हैं, जिससे क्षेत्र में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका स्पष्ट होती है। इस शोध में हमने मुख्य रूप से युवा वर्ग जिसमें आयु संरचना में 18–25 वर्ष के युवाओं का प्रभुत्व पाया गया, जो अध्ययन के उद्देश्य के अनुरूप है क्योंकि हम शोध में मोटे अनाज की युवा वर्ग के रोजगार की स्थिति को जानना है । कौशल विकास कार्यक्रमों की स्थिति का विश्लेषण दर्शाता है कि केवल 16.70% उत्तरदाताओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है तथा मात्र 11.8% ने सरकारी मिलेट कार्यक्रमों में भाग लिया है, जो युवा वर्ग तक कार्यक्रमों की सीमित पहुँच एवं जागरूकता को इंगित करता है। प्रशिक्षण का स्वरूप मुख्यतः खेती तक ही सीमित रहा हैं , जबकि प्रसंस्करण एवं उद्यमिता से संबंधित प्रशिक्षण अपेक्षाकृत कम पाया गया। रोजगार पर प्रभाव के संदर्भ में पाया गया कि प्रशिक्षण प्राप्त उत्तरदाताओं में से लगभग आधे को रोजगार प्राप्त हुआ तथा 70% से अधिक ने रोजगार अवसरों में वृद्धि को स्वीकार किया। इसी प्रकार आय के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि लगभग 70% उत्तरदाताओं की आय में वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त अधिकांश उत्तरदाताओं ने प्रशिक्षण को महत्वपूर्ण माना है एवं कौशल के माध्यम से विशेष आर्थिक बदलाव की बात कही है | अध्ययन में उत्तरदाताओं के सम्मुख आने वाली मुख्य समस्याओं में पाया गया जिसमें बाजार की कमी, वित्तीय संसाधनों का अभाव तथा प्रशिक्षण की सीमित उपलब्धता प्रमुख बाधाएँ हैं।

शब्द कुंजी :-,कौशल प्रशिक्षण , मोटे अनाज , रोजगार सृजन, जनजातीय युवा, आय वृद्धि, ग्रामीण आजीविका, बस्तर

1.प्रस्तावना :-

"किसी समाज की वास्तविक समृद्धि केवल संसाधनों की प्रचुरता में नहीं, बल्कि उन संसाधनों के ज्ञान, कौशल और विवेक पूर्ण उपयोग में निहित होती है।" भारत की कृषि परंपरा पुरातन कल से है अत्यंत समृद्ध रही है और इसमें मोटे अनाज (श्री अन्न) जैसे कोदो, कुटकी, रागी और ज्वार का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। ये अनाज न केवल पोषण की दृष्टि से समृद्ध हैं, बल्कि पर्यावरणीय अनुकूलता और ग्रामीण एवं जनजातीय अर्थव्यवस्था की स्थिरता के लिए भी महत्वपूर्ण माने जाते हैं। विशेष रूप से छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले जो की जनजातीय बहुल क्षेत्रों में से एक है जहाँ मोटे अनाज सदियों से स्थानीय जनजीवन औरकृषि प्रणाली का अभिन्न अंग रहे हैं। बस्तर अंचल के जनजातीय समुदाय इन अनाजों को केवल खाद्य पदार्थ के रूप में ही नहीं,अपितु अपने महत्वपूर्ण संस्कृति परंपरा और आजीविका के आधार के रूप में देखते हैं। बस्तर क्षेत्र अपने भौगोलिक दृष्टि से वन संपदा से भरपूर है एवं जनजातीय रूप से भी समृद्ध है | यह क्षेत्र कुछ आयाम सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत पिछड़ा क्षेत्र माना जाता रहा है किन्तु आज यहाँ की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार देखने को मिली है | यह क्षेत्र लंबे समय से माओवाद की समस्या से भी प्रभावित रहा हैं, जिस कारण यहाँ के युवाओं के लिए रोजगार और आजीविका के अवसर काफी हद तक बाधित रहे हैं। इन परिस्थितियों में स्थानीय संसाधनों पर आधारित विकास मॉडल अत्यंत आवश्यक हो जाता है, जो न केवल आर्थिक

सशक्तिकरण प्रदान करे सके। यह शोध इसी विषय में मोटे अनाजों (श्री अन्न) पर संचालित कौशल विकास कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण विकल्प के रूप में सामने आए हैं। हाल के वर्षों में सरकार और विभिन्न संस्थाओं द्वारा मिलेट मिशन, कौशल विकास प्रशिक्षण तथा खाद्य प्रसंस्करण कार्यक्रमों के माध्यम से मोटे अनाजों से जुड़े नए रोजगार अवसर विकसित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से जनजातीय युवाओं को मोटे अनाज की उन्नत खेती, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, विपणन तथा उद्यमिता से संबंधित कौशल प्रशिक्षण प्रदान किए जा रहे हैं। इससे न केवल उनकी आय में वृद्धि की संभावना उत्पन्न होती है, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन संभव हो पाए जिससे बस्तर के युवा वर्ग को स्थाई रोजगार भी प्रदान किया जा सके है। बस्तर क्षेत्र में जहाँ पुरातन कृषि और प्राकृतिक खाद का विशेष उपयोगिता है, यहाँ मोटे अनाज आधारित कौशल विकास कार्यक्रम जनजातीय युवाओं के लिए आर्थिक सशक्तिकरण एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता का एक महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध हो सके । यह मोटे अनाज आधारित प्रशिक्षण न केवल युवाओं को अपने स्थानीय स्तर पर रोजगार उपलब्ध कराने में सहायक होंगे बल्कि स्थाई रोजगार भी प्रदान करेंगे जो उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकता है। इसी शोध अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि मोटे अनाज आधारित कौशल विकास प्रशिक्षण का बस्तर के जनजातीय युवाओं के रोजगार अवसरों और आय वृद्धि को किस तरह से प्रकार प्रभावित कर रहे हैं। यह अध्ययन न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था में इन कार्यक्रमों की भूमिका को स्पष्ट करेगा, बल्कि भविष्य में जनजातीय क्षेत्रों के सतत और समावेशी विकास के लिए नीति-निर्माण में भी उपयोगी दिशा प्रदान कर सकता है।

2.साहित्य समीक्षा :-

मोटे अनाज(श्री अन्न) भारत की परम्परागत खेती का एक अनिवार्य हिस्सा रहे हैं और साथ ही साथ जनजातीय क्षेत्रों में इनका आर्थिक, सामाजिक और पोषण संबंधी योगदान महत्वपूर्ण हैं। हाल के वर्षों में हो रहें जलवायु परिवर्तन, पोषण सुरक्षा एवं ग्रामीण विकास के संदर्भ में मोटे अनाजों पर केंद्र एवं राज्य सरकार ही नहीं अपितु जनसामान्य का भी ध्यान पुनः केन्द्रित कर रहा है। पूर्व में विभिन्न शोधकर्ताओं ने मोटे अनाज की कृषि, पोषण, आर्थिक उपयोगिता तथा ग्रामीण आजीविका में इसकी भूमिका का अध्ययन किया है।

माधुसूदन एवं सह लेखकों ने वर्षा आधारित कृषि क्षेत्रों में मोटे अनाज की भूमिका का विश्लेषण किया और पाया की ये मोटे अनाज कम पानी और सीमित संसाधनों में भी सफलतापूर्वक उत्पादित किये जा सकते हैं। उनके अनुसार मोटे अनाज न केवल खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं, बल्कि जोखिम प्रबंधन की दृष्टि से भी किसानों के लिए महत्वपूर्ण हैं, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहाँ जलवायु अनिश्चितता अधिक होती है (Madhusudhana, 2013)।

हरिप्रसन्ना (2017) ने अपने शोध में मोटे अनाज की पोषण के विशेषताओं और कुपोषण को कम करने में मोटे अनाज की भूमिका पर प्रकाश डाला है। उनके शोध के अनुसार रागी, ज्वार और बाजरा जैसे मोटे अनाज आयरन, कैल्शियम और फाइबर से परिपूर्ण होते हैं, जो ग्रामीण और जनजातीय समुदायों के कुपोषण स्तर को कम करने में सहायता दिलाती है एवं पोषण के स्तर को मजबूत करती है ।

छत्तीसगढ़ के जनजातीय क्षेत्रों में छोटे मिलेट की खेती पर किए गए एक शोध में साहू (2019) ने परिणाम प्राप्त किया की कोदो, कुटकी और रागी जैसी फसलें बस्तर क्षेत्र की परम्परागत खेती का आधार है। शोध में यह भी देखा गया है कि इन फसलों की खेती को करने वाले कृषक मुख्य रूप में छोटे और सीमांत कृषक है और यह उनकी जीविका में मोटे अनाज की खेती का महत्वपूर्ण स्थान है ।

बस्तर जिले में मोटे अनाज की आर्थिक उपयोगिता पर किए गए शोध में वर्मा एवं बनाफर (2013) ने निष्कर्ष निकला कि कोदो और कुटकी की खेती में लागत अन्य की अपेक्षा कम होती है जिससे कृषक परिवार में कृषि के क्षेत्र की लागत कम होती है जो उनकी बचत स्तर को मजबूत करती है जो उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनती है। हालांकि बाजार की व्यवस्था, की कमी और प्रसंस्करण सुविधाओं तक पहुँच की सुविधा न होने के कारण किसानों को अपेक्षित आर्थिक लाभ नहीं प्राप्त होती है जो उन्हें वास्तव में प्राप्त होनी चाहिए ।

त्रिपाठी एवं तिवारी 2020 ने तकनीकी हस्तक्षेप और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव पर किए गए शोध में निष्कर्ष निकला कि यदि किसानों को उन्नत बीज, आधुनिक खेती विधि और प्रसंस्करण से संबंधित प्रशिक्षण दिया जाए तो मोटे अनाज की उत्पादकता की मात्रा में वृद्धि होगी जो कृषक को आर्थिक लाभ में महत्वपूर्ण वृद्धि संभव है। कृषि विस्तार कार्यक्रमों के माध्यम से मोटे अनाज उत्पादन में कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सुधार देखा गया है।

हाल के वर्षों में केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार के द्वारा चलाए जा रहे मिलेट मिशन और कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से मोटे अनाज उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन की मात्रा में वृद्धि प्राप्त करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इन योजनाओं के माध्यम, से कृषक परिवारों एवं ग्रामीण युवा वर्ग को प्रशिक्षण प्रदान करके उन्हें स्वरोजगार प्राप्ति में सहायता प्रदान करना है। किन्तु उपलब्ध साहित्यों में मोटे अनाज आधारित कौशल विकास कार्यक्रमों और जनजातीय युवाओं के रोजगार तथा आय वृद्धि के बीच संबंध पर सीमित मात्र में ही शोध कार्य हुए है।

इस प्रकार उपलब्ध साहित्य से यह निष्कर्ष मिलता है कि मोटे अनाज ग्रामीण अर्थव्यवस्था ,कृषि और पोषण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। किन्तु बस्तर क्षेत्र के जनजातीय युवाओं के संदर्भ में मोटे अनाज आधारित कौशल विकास कार्यक्रमों के रोजगार और आय पर प्रभाव का अध्ययन अपेक्षाकृत कम किया गया है। अतः प्रस्तुत अध्ययन इस शोध अंतर को पूरा करने का प्रयास करेगा।

3.शोध प्रविधि : -

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बस्तर क्षेत्र में मोटे अनाज आधारित कौशल विकास कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का अध्ययन एवं उसका जनजातीय क्षेत्र के युवा वर्ग को प्राप्त हो रहे स्वरोजगार एवं रोजगार की स्थिति का अध्ययन करना है। यह अध्ययन मुख्यतः वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इस शोध का अध्ययन क्षेत्र मुख्य रूप में छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर जिला है। अध्ययन में द्वितीयक आँकड़ों एवं प्राथमिक आंकड़ों का उपयोग किया गया है द्वितीयक आँकड़े सरकारी रिपोर्टों, शोध पत्रों तथा संस्थागत प्रकाशनों से एकत्र किए गए हैं तथा प्राथमिक आंकड़े ऑनलाइन (गूगल फॉर्म)प्रश्नावली के माध्यम से 102 उत्तरदाताओं से सम्पर्क कर प्राप्त किया गया है । इस शोध अध्ययन के माध्यम से मोटे अनाज आधारित कौशल विकास कार्यक्रमों के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन किया गया है। इस अध्ययन में हमारी कुछ सीमाएं रही है जिसमें कुछ उत्तरदाता द्वारा कुछ प्रश्नों के उत्तर न देना और कुछ प्रश्नों को उनके द्वारा ठीक से न समझ पाना भी है |

4.अध्ययन का उद्देश्य:-

- बस्तर क्षेत्र में मोटे अनाज आधारित कौशल विकास कार्यक्रमों की स्थिति का अध्ययन करना।
- इन कार्यक्रमों का जनजातीय युवाओं के रोजगार पर प्रभाव का विश्लेषण करना।
- मोटे अनाज आधारित गतिविधियों से जनजातीय युवाओं की आय में हुए परिवर्तन का अध्ययन करना।
- मोटे अनाज आधारित कौशल विकास के माध्यम से स्थानीय आर्थिक सशक्तिकरण की संभावनाओं का मूल्यांकन करना।

5.परिकल्पना (Hypotheses):-

परिकल्पना किसी भी वैज्ञानिक शोध की आधारशिला होती हैं जो हमारे शोध को शोध विषय से भटकने से रोकती हैं एवं मार्ग प्रदर्शन करती है इस शोध में निम्न परिकल्पना का चयन किया गया है -

H_1: - बस्तर जिले में मोटे अनाज हेतु संचालित कौशल विकास कार्यक्रमों का जनजातीय युवा वर्ग के रोजगार अवसरों और आय वृद्धि में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

H_0: - बस्तर जिले में मोटे अनाज हेतु संचालित कौशल विकास कार्यक्रमों का जनजातीय युवा वर्ग के रोजगार अवसरों और आय वृद्धि पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता।

6. बस्तर जिले में संचालित मोटे अनाज आधारित कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम :-

बस्तर जिले में मोटे अनाज आधारित कौशल विकास कार्यक्रमों का संचालन राज्य सरकार, कृषि विभाग एवं विभिन्न संस्था के द्वारा चलाये जा रहे है । इन कौशल प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य जनजातीय युवाओं तथा कृषक वर्ग की तकनीकी दक्षता प्रदान कर उनकी आय एवं रोजगार के अवसरों की मात्रा में वृद्धि करना है। इस संदर्भ में बस्तर क्षेत्र में संचालित प्रमुख कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण निम्नवत है:

6.1 मिलेट उत्पादन से संबंधित कौशल प्रशिक्षण:-बस्तर क्षेत्र में कृषि विस्तार सेवाओं एवं सरकारी योजनाओं के माध्यम से किसानों एवं युवाओं को आधुनिक कृषि तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस कौशल प्रशिक्षण द्वारा उन्नत कृषि बीज चयन, आधुनिक खेती विधि एवं जैविक खेती, पोषक तत्व प्रबंधन तथा जल की संरक्षण विधियों पर विशेष बल दिया जाता है। इन कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों के परिणाम स्वरूप मोटे अनाज के उत्पादन में वृद्धि एवं कृषि की लागत में कमी जिससे कृषक

परिवार की आय में सुधार लाना है। पुरातन कृषि प्रणाली में आधुनिक दृष्टिकोण के माध्यम से सतत एवं समावेशित रूप से उत्पादकता की मात्रा में भी वृद्धि लाना है |

6.2 मिलेट प्रसंस्करण (Processing) से संबंधित कौशल प्रशिक्षण:-

बस्तर संभाग में मिलेट प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना के साथ-साथ युवाओं को प्रसंस्करण संबंधी प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। विशेष रूप से कांकेर जिले में स्थापित मिलेट प्रोसेसिंग यूनिट इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। प्रशिक्षण के अंतर्गत मिलेट की सफाई, ग्रेडिंग, मिलिंग, आटा उत्पादन तथा मूल्य संवर्धन से संबंधित तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके माध्यम से मिलेट आधारित विभिन्न उत्पाद जैसे आटा, बिस्किट, लड्डू, दलिया एवं इंस्टेंट फूड तैयार किए जा रहे हैं। इन गतिविधियों के परिणामस्वरूप स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं तथा महिला स्व-सहायता समूहों की आय में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

6.3 उद्यमिता कौशल विकास प्रशिक्षण:-

मोटे अनाज आधारित उद्यमिता को प्रोत्साहित करने हेतु युवाओं को लघु उद्योग संचालन, व्यवसाय प्रबंधन, पैकेजिंग एवं ब्रांडिंग तथा विपणन तकनीकों का प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इस प्रकार के प्रशिक्षण से युवा न केवल रोजगार प्राप्त कर रहे हैं, बल्कि स्वरोजगार की दिशा में भी अग्रसर होंगे |

6.4 महिला स्व-सहायता समूहों का कौशल विकास: -

बस्तर क्षेत्र में महिला स्व-सहायता समूह मोटे अनाज (श्री अन्न) आधारित गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन समूहों को खाद्य प्रसंस्करण, पैकेजिंग एवं विपणन से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों के प्रभाव स्वरूप महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण हुआ है, परिवार की आय में वृद्धि हुई है तथा स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन को बढ़ावा मिला है। इससे न केवल महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है, बल्कि क्षेत्रीय विकास को भी गति मिली है।

समग्र विश्लेषण:-

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि बस्तर जिले में संचालित मोटे अनाज आधारित कौशल विकास कार्यक्रम बहुआयामी प्रभाव उत्पन्न कर रहे हैं। ये कार्यक्रम उत्पादन, प्रसंस्करण एवं उद्यमिता के माध्यम से जनजातीय युवाओं के लिए रोजगार एवं आय के नए अवसर सृजित करने में सहायक है, साथ ही महिला स्व-सहायता समूहों की सक्रिय भागीदारी से आर्थिक सशक्तिकरण को भी बल मिल रहा है। अतः यह कहा जा सकता है कि ये कार्यक्रम क्षेत्रीय आर्थिक विकास एवं सतत ग्रामीण आजीविका के लिए एक प्रभावी माध्यम सिद्ध हो रहे हैं।

7. आंकड़ों का विश्लेषण :-

अध्ययन के लिए हमने बस्तर के102 परिवारों से सूचना (आंकड़ों) का संकलन किया जिसका विश्लेषण इस अध्याय में किया गया है जिसमें मोटे अनाज आधारित कौशल प्रशिक्षण की स्थिति तथा उसकी उपयोगिता का मूल्यांकन किया गया है |

7.1 उत्तरदाताओं का व्यवसाय अनुसार वितरण

तालिका -01

क्रमांक	व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
1	कृषि	67	65.70%
2	मजदूरी	6	5.90%
3	स्वरोजगार	4	3.90%
4	अन्य	25	24.50%
कुल		102	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में अधिकांश उत्तरदाता कृषि कार्य से जुड़े हुए हैं। कुल 102 उत्तरदाताओं में से 67 (65.70%) उत्तरदाता कृषि को अपना प्रमुख व्यवसाय मानते हैं, जो यह दर्शाता है कि बस्तर क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि आधारित है तथा मोटे अनाज की खेती यहाँ की आजीविका का महत्वपूर्ण आधार है। इसके अतिरिक्त 25 (24.50%) उत्तरदाता अन्य व्यवसायों से जुड़े हुए हैं, जिनमें छोटे व्यवसाय, सेवाएँ अथवा पारंपरिक कार्य सम्मिलित हैं। वहीं 5.90% उत्तरदाता की जीविका मजदूरी पर निर्भर हैं, जो क्षेत्र में सीमित रोजगार अवसरों की ओर संकेत करता है।सबसे कम संख्या स्वरोजगार 3 .90% से जुड़ी हुई पाई गई, जो यह दर्शाती है कि क्षेत्र में उद्यमिता का स्तर अभी भी अपेक्षाकृत युवा वर्ग में कम है । समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि बस्तर क्षेत्र में कृषि प्रमुख आजीविका का साधन है, जबकि स्वरोजगार एवं गैर-कृषि गतिविधियों का विकास सीमित है। अतः मोटे अनाज आधारित कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से स्वरोजगार एवं उद्यमिता को बढ़ावा देने की पर्याप्त संभावनाएँ दृष्टिगोचर हो सकती हैं।

7.2 मोटे अनाज की खेती की स्थिति :-

तालिका - 02

विकल्प	संख्या	प्रतिशत
हां	60	58.80%
नहीं	42	41.20%
कुल	102	100%

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में मोटे अनाज की खेती का व्यापक प्रसार है। कुल 102 उत्तरदाताओं में से 58.80% उत्तरदाता मोटे अनाज की खेती करते हैं, वही 41.20% उत्तरदाता इस प्रकार की खेती से जुड़े नहीं हैं जो की सभी लगभग युवा वर्ग के है यह परिणाम दर्शाता है कि बस्तर क्षेत्र में मोटे अनाज (जैसे कोदो, कुटकी एवं रागी) पारंपरिक कृषि प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बने हुए हैं यही दर्शाती है की बस्तर जिले के लिए आज भी खास कर के जनजातीय समुदाय के जन जीवन के लिए मोटे अनाज की भूमिका महत्व पूर्ण है |

7.3 मोटे अनाज की प्रशिक्षण स्थिति :-

तालिका 03

विकल्प	संख्या	प्रतिशत
हां	17	58.80%
नहीं	85	41.20%
कुल	102	100%

शोध से प्राप्त होता है कि कुल 102 उत्तरदाताओं में से केवल 16.70% उत्तरदाताओं ने ही मोटे अनाज और उससे सम्बन्धित प्रशिक्षण प्राप्त किया है, जबकि 83.30% उत्तरदाता ने प्रशिक्षण प्राप्त नहीं कर पायें है । यह दर्शाता है कि बस्तर क्षेत्र में मोटे अनाज आधारित कौशल विकास कार्यक्रमों की पहुँच अभी भी सीमित है। प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं का दर कम है, फिर भी यह वर्ग अधिक कुशल एवं जागरूक माना जा सकता है। अतः कौशल प्रशिक्षण की कमी को कम किया जाए जिससे अधिक से अधिक जनजातीय युवाओं को रोजगार एवं आय वृद्धि के अवसर प्राप्त हो सकें।

7.4 प्रशिक्षण के प्रकार

तालिका - 04

प्रकार	संख्या
खेती	16
उद्यमता	01
प्रसंस्करण	00
विपणन	00
कुल	17

तालिका 04 अध्ययन से ज्ञात होता है की प्रशिक्षण की पहुँच तो है किन्तु युवा वर्ग एवं समाज में जिन्होंने प्रशिक्षण लिया है ओ आज भी खेती और उससे सम्बन्धित कार्यों तक ही सीमित है यहाँ खेती में 16 उत्तरदाता ने अपनी प्रशिक्षण की बात कही है किन्तु केवल 01 ने अपनी प्रशिक्षण उद्यमता के क्षेत्र में प्राप्त किया है ,यहाँ हमें प्रसंस्करण, विपणन के प्रशिक्षण को और अत्यधिक विस्तार देने की आवश्यकता है |

7.5 सरकारी प्रशिक्षण में भागीदारी :-

तालिका - 05

विकल्प	संख्या	प्रतिशत
हां	12	11 .80%
नहीं	90	88 20%
कुल	102	100%

तालिका 05 के अध्ययन से विदित होता है की इन क्षेत्रों में आज भी सरकारी प्रशिक्षण की भूमिका और पहुँच में कमी है कुल उत्तरदाता 102 में से केवल 11.80% ने ही सरकारी संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त किया है तथा 88.20%ने किसी भी तरह का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है जो की एक जो दर्शाती है की हमें सरकारी प्रशिक्षण की अत्यधिक मात्रा में जन सामान्य से जोड़ने की जरूरत है |

7.6 मोटे अनाज कौशल प्रशिक्षण की उपयोगिता :-

तालिका – 06

विकल्प	संख्या
बहुत उपयोगी	03
उपयोगी	09
सामान्य	04
अनुपयोगी	01
कुल	17

तालिका 06 के अध्ययन से ज्ञात है की जितने भी प्रशिक्षण प्राप्त किया है उन्हें रोजगार ,स्वरोजगार एवं अन्य से कितनी उपयोगिता प्राप्त हुआ उत्तरदाताओं से 03 ने बहुत उपयोगिता बतलाया ,09 अत्यधिक उत्तरदाता ने मोटे अनाज से सम्बन्धित कौशल प्रशिक्षण की उपयोगिता को स्वीकार किया जो कौशल प्रशिक्षण की महत्व को प्रदर्शित करता है यहीं 04 ने कौशल प्रशिक्षण की उपयोगिता को सामान्य मन है | हम देखते है की केवल 01 उत्तरदाता ने कौशल प्रशिक्षण की उपयोगिता को नहीं स्वीकारता है और उसे अनुपयोगी मानता है ,इससे कौशल प्रशिक्षण के बाद प्राप्त हो रहे रोजगार की स्थिति ही उसकी उपयोगिता है और प्रशिक्षण की उपयोगिता एवं पहुँच की मात्रा को बढ़ाने की आवश्यकता है ।

7.7 प्रमुख समस्या :-

तालिका – 07

समस्या	**संख्या**
बाजार की समस्या	**7**
प्रशिक्षण की कमी	**2**
वित्तीय समस्या	**3**
अन्य	**5**
कुल	**17**

इस तालिका के अध्ययन से विदित होता है की प्रशिक्षण के पश्चात भी समस्या का सामना करना पड़ रहा है जिसमें 07 ने बाजार की पहुँच और जानकारी की समस्या को स्वीकारा है 02 ने प्रशिक्षण की कमी माना है, 03 उत्तरदाता ने प्रशिक्षण के पश्चात् वित्तीय आवश्यकता को अपनी प्रमुख समस्या मन है वही 05 ने अन्य समस्याओं को अपनी स्वरोजगार एवं रोजगार में बाधा मन है हमें इन बाधाओं को दूर करें का प्रयास करने की आवश्यकता है ताकि मोटे अनाज के कौशल प्रशिक्षण की पूर्ण उपयोगिता को प्राप्त किया जा सके |

8. शोध सुझाव:-

8.1 कौशल प्रशिक्षण का विस्तार :-

हमने अपने शोध में पाया की केवल 16.70% उत्तरदाता ने ही मोटे अनाज से सम्बन्धित प्रशिक्षण प्राप्त किया है जो की बहुत हुई सीमित दायरा है इसे बदने की जरूरत है जिससे जनजातीय युवा वर्ग को अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त हो सके |

8.2 प्रशिक्षण की गुणवत्ता एवं व्यावहारिक बनाना :-

कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम को और अत्यधिक व्यावहारिक एवं रोजगार पूर्ण बनाने की जरूरत है जिससे बस्तर के युवा वर्ग अधिक से अधिक कौशल प्रशिक्षण से जुड़ सके और समाज के विकास और स्वयं के आर्थिक विकास में अहम भूमिका एवं स्थान प्राप्त कर सकें |

8.3 बाजार की पहुँच को आसान बनाना :-

शोध के अध्ययन से पता चला है की 17 में से 07 उत्तरदाता ने प्रमुख समस्या में बाजार की पहुँच की समस्या बतलाई है जिसके समाधान की अत्यधिक आवश्यकता है वर्तमान में युवा को कौशल प्रशिक्षण के साथ -साथ ई-मार्केट जैसे प्लेटफार्म की पहुँच को बढ़ाने की जरूरत है |

8.4 वित्तीय सहायता :-

कौशल प्रशिक्षण के साथ – साथ जनजातीय युवा वर्ग को वित्तीय सहायता प्रदान करें की भी जरूरत है ताकि प्रशिक्षण प्राप्त करने के पाश्चात्य अपनी स्वयं की स्वरोजगार स्थापित कर सके |

8.5 मोटे अनाज से सम्बंधित सरकारी योजना के प्रति जागरूकता :-

Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

हमने अध्ययन में पाया की बहुत ही कम लोग सरकारी योजनाओं में भाग ले रहें जो जिससे इन योजनाओं की सम्पूर्ण लाभ समाज को प्राप्त ही नहीं हो पा रहा है इस बाधा को दूर करने के लिए हमें मोटे अनाज से सम्बन्धित योजनाओं को जन सामान्य तक पहुँच एवं जागरूक करने की जरूरत है ।

8.6 तकनीकी एवं डिजिटल प्रशिक्षण :-वर्तमान समय आधुनिकता की दौर से गुजर रही है इस दौर से युवा वर्ग को जोड़ने की जरूरत है जिससे युवा डिजिटल मार्केटिंग ,ऑनलाइन बिक्री एवं ई-कामर्स प्लेटफार्म का प्रशिक्षण देने की जरूरत है ताकि वे अपने उत्पादों को व्यापक बाजार तक पहुँच प्रदान कर सके|

शोध निष्कर्ष :-

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य बस्तर जिले के जनजातीय क्षेत्रों में मोटे अनाज आधारित कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों की स्थिति तथा उनके जनजातीय युवा वर्ग के रोजगार अवसर एवं आय वृद्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना था। शोध के दौरान उपलब्ध प्राथमिक आँकड़ों और विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है की बस्तर क्षेत्र में पारंपरिक रूप से उगाए जाने वाले मोटे अनाज जैसे कोदो, कुटकी और रागी न केवल स्थानीय खाद्य प्रणाली का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, बल्कि यह जनजातीय समुदाय की आजीविका के लिए भी महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में देखने को मिलता है। बस्तर जिले के समस्त तहसील में मोटे अनाज की खेती व्यापक रूप से की जाती है और इससे बड़ी संख्या में किसान परिवार जुड़े हुए हैं। इन क्षेत्रों में मिलेट उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन से संबंधित गतिविधियों के विस्तार ने स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न किए हैं। शोध से यह भी ज्ञात होता है कि मोटे अनाज आधारित कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को कृषि तकनीक, खाद्य प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन और विपणन से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप कई युवाओं ने स्व-रोजगार गतिविधियों जैसे मिलेट प्रसंस्करण, खाद्य उत्पाद निर्माण और स्थानीय बाजारों में विपणन को अपनाया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि कौशल विकास कार्यक्रम स्थानीय संसाधनों को आर्थिक अवसरों में परिवर्तित करने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं किन्तु अभी भी यह उन सभी लोगो तक नहीं पहुँचता है इस क्षेत्र में मोटे अनाज की खेती में 58% परिवार करते है परन्तु केवल 17 परिवार ही प्रशिक्षण प्राप्त किया है जो बहुत ही कमी को दर्शाता है|

अध्ययन के विश्लेषण से यह भी संकेत मिलता है कि यदि मोटे अनाज आधारित कौशल विकास कार्यक्रमों का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए तथा इन्हें बाजार, प्रसंस्करण उद्योग और उद्यमिता से जोड़ा जाए, तो बस्तर क्षेत्र के जनजातीय युवाओं के लिए स्थायी रोजगार और आय वृद्धि की व्यापक संभावनाएँ विकसित की जा सकती हैं। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मोटे अनाज आधारित कौशल विकास कार्यक्रम बस्तर क्षेत्र में ग्रामीण विकास, रोजगार सृजन और आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने का एक प्रभावी माध्यम सिद्ध हो सकते हैं।

अतः प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पना के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि मोटे अनाज आधारित कौशल विकास कार्यक्रमों का जनजातीय युवाओं के रोजगार अवसरों और आय वृद्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने की संभावना विद्यमान है, जिससे क्षेत्रीय विकास और जनजातीय समुदाय के जीवन स्तर में सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. Schultz, T. W. (1961). Investment in human capital. *The American Economic Review*, 51(1), 1–17.
2. Becker, G. S. (1993). Human capital: A theoretical and empirical analysis, with special reference to education (3rd ed.). University of Chicago Press.
3. Hariprasanna, K. (2017). Millets for nutritional security in India. *Indian Farming*, 67(5), 12–15.
4. Madhusudhana, R. (2013). Small millets for sustainable agriculture and food security. *Journal of Agricultural Research*, 8(3), 45–50.
5. Sahu, R. K. (2019). Cultivation patterns of small millets in the tribal belts of Chhattisgarh state. *Journal of Pharmacognosy and Phytochemistry*, 8(6), 1542–1545.
6. Tripathi, A., & Tiwari, P. (2020). Impact of agricultural extension and training on millet production in tribal regions. *International Journal of Agricultural Sciences*, 12(4), 102–108.
7. Verma, L. R., & Banafar, K. N. (2013). Economic analysis of minor millets in Bastar district of Chhattisgarh. *International Journal of Agricultural Economics*, 5(2), 89–95.
8. Government of Chhattisgarh. (2023). *Chhattisgarh Millet Mission: Promotion of millets in tribal areas*. Raipur: Department of Agriculture Development and Farmers Welfare, Government of Chhattisgarh.

9. National Bank for Agriculture and Rural Development. (2023). *Millet value chain development in Chhattisgarh*. Mumbai: NABARD.
10. Press Information Bureau. (2023). *International Year of Millets: Promotion of millets in India*. Government of India.
11. TRIFED. (2022). *Van Dhan Vikas Kendras and tribal livelihood development report*. New Delhi: Ministry of Tribal Affairs, Government of India.
12. NITI Aayog. (2021). *Promotion of millets in India and tribal livelihood development*. New Delhi: Government of India.
13. Ministry of Agriculture & Farmers Welfare. (2023). *Millet production statistics and policy initiatives in India*. New Delhi: Government of India.
14. Business Standard. (2023). *Chhattisgarh government encourages millet production and processing industry*.
15. Hindustan Times. (2022). *Millet processing unit inaugurated in Maoist-affected Kanker district of Chhattisgarh.*
16. Times of India. (2022). *Chhattisgarh government procures millets at MSP from farmers.*
17. Department of Agriculture Development and Farmers Welfare, Chhattisgarh. (2023). *Chhattisgarh Millet Mission: Annual report and district level statistics.* Raipur: Government of Chhattisgarh.
18. National Bank for Agriculture and Rural Development. (2023). *Millet value chain development in Chhattisgarh.* Mumbai: NABARD.
19. TRIFED. (2022). *Van Dhan Vikas Kendras and tribal livelihood programme report.* New Delhi: Ministry of Tribal Affairs.
20. NITI Aayog. (2021). *Promotion of millets in India and strategies for tribal livelihood development.* New Delhi: Government of India.
21. Ministry of Agriculture & Farmers Welfare. (2023). *Agricultural statistics and millet production in India.* New Delhi: Government of India.